

डॉ. अगस्त कोकेल, इतिहास, सत्र 11, इज़राइल के नेता

© 2024 गस कोकेल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. ऑगस्ट कुंकेल द्वारा इतिहास की पुस्तकों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 11 है, इस्राएल के नेता। एक राज्य को नेताओं की आवश्यकता होती है।

इतिहासकार का ध्यान उन नेताओं पर नहीं होगा जिनका उल्लेख उसने पहले दाऊद द्वारा अपने साम्राज्य के निर्माण के संबंध में किया था। यह उन नेताओं को नज़रअंदाज़ नहीं करेगा, बल्कि इतिहासकार की चिंता इस्राएल के नेताओं के लिए है जो परमेश्वर के राज्य के रूप में इस्राएल का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए, वह यहाँ अध्यायों की एक पूरी श्रृंखला लेता है, जो फिर से हमें काफी अरुचिकर लग सकती है।

लेकिन वास्तव में, अगर हम इन अध्यायों के विवरण की जांच करना शुरू करते हैं, तो वे काफी महत्वपूर्ण हैं। राष्ट्र के नेताओं के रूप में कौन महत्वपूर्ण है? खैर, इतिहासकार यहाँ पाँच अध्यायों का उपयोग करने जा रहा है, 23 से 26, ठीक है पाँच नहीं। 23 से 26 तक के अध्यायों का उपयोग इस्राएल के नेताओं के बारे में बात करने के लिए किया जा रहा है, जो मंदिर के कार्य, मंदिर के चारों ओर पूजा का संचालन करते हैं।

ये इस्राएल के राष्ट्र के नेता हैं जो वास्तव में उसका प्रतिनिधित्व करते हैं। फिर, अध्याय 27 में, वह साम्राज्य के प्रशासन के बारे में थोड़ा और बात करने जा रहा है। हाँ, बेशक, साम्राज्य को प्रशासन की ज़रूरत है, और वह उस हिस्से को छोड़ने वाला नहीं है।

लेकिन उसकी पहली चिंता यह है कि दाऊद मंदिर की तैयारी के लिए क्या करता है। मंदिर की तैयारी के लिए दाऊद द्वारा किए जाने वाले कामों में से एक सिर्फ मंदिर की जगह चुनना और सारी सामग्री तैयार करना नहीं है, जिसका परिचय उसने सुलैमान को दिए गए अपने आदेश में अध्याय 22 में दिया है। उसे नेताओं के लिए प्रावधान करना है, और ये नेता लेवीय हैं।

तो अब इतिहासकार लेवियों की वंशावली और उनके वैधीकरण के संदर्भ में उनकी संरचना के बारे में बात नहीं करने जा रहा है। इस तरह वे अपने वंशजों को लेवी से जोड़ते हैं ताकि वे ही मंदिर के चारों ओर अगुआ के रूप में कार्य करने के योग्य हों। इसके बजाय, वह संगठन और जिस तरह से दाऊद ने लेवियों के इन विभाजनों को उनके अलग-अलग कार्यों में रखा है, उसके बारे में बात करने जा रहा है।

और इसलिए, वह लेवियों के बारे में समग्र रूप से बात करने जा रहा है। वह उन्हें विभाजित करने जा रहा है। फिर, वह उन पुजारियों के बारे में बात करने जा रहा है जो लेवियों का एक विशेष हिस्सा हैं।

फिर, जैसा कि हमने देखा, मंदिर के कार्य के लिए संगीतकार महत्वपूर्ण हैं। फिर, द्वारपाल, मंदिर की एक और बहुत ही महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण भूमिका है। और फिर, अंत में, वह लेवियों के

अधिकारियों और न्यायाधीशों के बारे में बात करने जा रहा है जो राज्य की नागरिकता के व्यवसाय का संचालन करते हैं।

तो, अब हम आगे बढ़ते हैं और देखते हैं कि दाऊद किस तरह से संगठन के लिए तैयारी करता है। अब, हमने कई बार उल्लेख किया है कि एक बार जब आपके पास एक केंद्रीकृत मंदिर होता है तो लेवियों के कर्तव्य बदल जाते हैं। और एक बार जब सारी पूजा उस मंदिर के चारों ओर होती है।

और इसलिए, लेवी सेवा के कई क्षेत्र हैं जिन्हें विशेष रूप से रेखांकित किया गया है। और यहाँ संख्याएँ उनकी सेवा के संदर्भ में लेवियों की आनुपातिकता को दर्शाती हैं। इसलिए, मंदिर की सेवा में, और इसका संबंध सभी दैनिक अनुष्ठानों और अन्य सभी चीज़ों से होगा जो परमेश्वर की आराधना की उपस्थिति को बनाए रखने, मोमबत्तियाँ जलाने और रोटी रखने और मंदिर के साथ होने वाले सभी कामों से होगा।

यही मुख्य व्यवसाय है, और यह 24,000 है। और फिर, जैसा कि हमने उल्लेख किया है, लेवी न्यायाधीश और अधिकारी हैं। अधिकारियों की एक तरह की रिकॉर्ड रखने की भूमिका होती है।

ये ऐसे लोगों का समूह है जिनका उल्लेख अन्य प्राचीन अभिलेखों में भी मिलता है और जो किसी न किसी रूप में राजनीतिक नेताओं या न्यायिक नेताओं के सहायक भी हैं। तो, ऐसे लोगों की संख्या 6,000 है। फिर सुरक्षा भी है।

उन्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि जो लोग वहाँ नहीं होने चाहिए, वे मंदिर में न जा पाएं। और वहाँ 4,000 लोग हैं। और फिर संगीतकार भी हैं।

और 4,000 और भी हैं। वे ही हैं जो मंदिर के संगीत के लिए व्यवस्था करते हैं, जब उनके त्यौहार, तीर्थयात्राएँ और स्तुति के समय होते हैं, जिनमें से कुछ का उल्लेख भजनों में किया गया है। तो, यहाँ इतिहासकार लैव्यव्यवस्था 23 में जो करता है वह यह है कि वह लेवी के तीन बेटों के पास वापस आता है, जिनसे हम पहले से ही परिचित हैं, यानी गेशोम, कहाथ और मरारी।

और वह उन्हें 24 परिवारों के संदर्भ में रेखांकित करता है। संख्या 24 महत्वपूर्ण होने जा रही है। जैसा कि हम बाद में देखेंगे, वह वास्तव में इन परिवारों के कार्यों को उनके लेवी संबंधी कर्तव्यों में गिनता है।

लेकिन 24 परिवार जो करते हैं वह यह है कि प्रत्येक परिवार पूरे कैलेंडर वर्ष के दो सप्ताह की सेवा करता है, जिस तरह से यहूदी कैलेंडर वर्ष काम करता है और संचालित होता है। उनके पास 12 महीने का कैलेंडर वर्ष था। फिर, कभी-कभी, सातवें महीने में, वे 13वां महीना भी जोड़ देते थे, लेकिन उनका कैलेंडर वर्ष हमेशा 12 महीने का होता था।

और इसलिए, लेवी परिवार इस तरह से विभाजित हो गए। और जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, हम कभी-कभी पितृसत्तात्मकता के बारे में बहुत नकारात्मक तरीके से बात करते हैं। लेकिन शास्त्रों में, इसका मतलब नकारात्मक नहीं है।

अब, यह सब अधिकारों और शक्ति के बारे में है। पितृसत्तात्मकता, अपनी परिभाषा में, संगठन की एक प्रणाली मात्र है जिसके द्वारा आप समझते हैं कि संपत्ति का शीर्षक किसके पास है और परिवार के एक निश्चित प्रतिनिधि के अनुसार कौन परिवारों का प्रतिनिधि है। इस मामले में, यह एक पुरुष था।

और इसका मतलब यह नहीं है कि सिर्फ उन्हीं के पास सत्ता थी। और इसका मतलब यह नहीं है कि अगर कोई पुरुष न हो, तो वह परिवार खत्म हो जाता है और अब योग्य नहीं रह जाता। पितृसत्तात्मकता इस तरह से काम नहीं करती।

अब आपको यह संदेश बहुत ज़्यादा एक्टिविस्ट लेखन में नहीं मिलेगा, खासकर आजकल धर्मग्रंथों के संबंध में एक्टिविस्ट लेखन में। लेकिन यहाँ माली की बेटियाँ थीं, एक लेवी जिसके कोई बेटा नहीं था, और उन्हें उनके पतियों के माध्यम से दर्शाया गया था। कुछ ऐसा जिसे इतिहासकार ने बहुत सावधानी से नोट किया है।

तो, भूमिका का यह परिवर्तन ऐसा है जिसमें लेवियों और पुजारियों के बीच बहुत कम स्पष्ट अंतर है। गिनती की पुस्तक में, लेवियों को वे कर्तव्य करने होते हैं जिन्हें अवोदा कहा जाता है। वे सभी शारीरिक कार्य हैं जो तम्बू की देखभाल और परिवहन में किए जाते हैं।

और यही वह है जिसे हिब्रू भाषा में उनकी सेवा या उनका अवोदाह, उनका काम कहा जाता है। अब, काम की परिभाषा, बेशक, हमेशा कुछ ऐसी होती है जो बदलती रहती है। और यह विशेष रूप से लेवियों के संबंध में बदल जाती है।

इसलिए, जबकि पहले पुजारी अपने वास्तविक कार्य में बहुत प्रतिष्ठित थे, जो कि तम्बू की देखभाल का कार्य था, जो कि बहुत छोटा और बहुत कम विस्तृत था और उस अर्थ में बहुत कम काम की आवश्यकता थी, लेकिन इसे दूसरे अर्थ में काम की आवश्यकता थी क्योंकि इसे हटाना था, इसे स्थानांतरित करना था, इसकी देखभाल करनी थी, कैनवस की सभी प्रकार की मरम्मत और बाकी सब कुछ करना था। यह बदल जाता है। और अब इतिहासकार उनके अवोदाह को लेवी के पुजारी के रूप में बोलते हैं।

दूसरे शब्दों में, वे पुजारियों के साथ मिलकर काम करते हैं। और शायद यह नियमित रूप से रोटी पकाने से संबंधित था, जिसे हर दिन बदलना पड़ता था, शोब्रेड की मेज पर, तेल का उत्पादन, कैंडेलब्रा और मेनोराह के लिए तेल इकट्ठा करना, जैसा कि वे उन्हें कहते थे। और कई अन्य कार्य जो उन्हें धूप, आग, बर्तन और बाकी सब कुछ बनाए रखने के लिए करने पड़ते थे।

तो, यह सब बहुत बढ़ गया था। और पुजारी यह सब नहीं कर सकते। इसलिए, लेवी एक अवोदा के रूप में मंदिर की सेवा में पुजारियों के साथ काम करते हैं।

वे पवित्र वस्तुओं की शुद्धता बनाए रखने के लिए भंडारगृहों की भी देखभाल करते थे। आखिरकार, पुराने निवासस्थान को मंदिर में संग्रहित किया जाता था, साथ ही कई अन्य

कलाकृतियाँ भी जिन्हें संरक्षित और संग्रहीत किया जाना था। इसलिए, ये लेवियों के कर्तव्य बन गए।

इतिहासकार फिर उनके विभाजनों के बारे में बताता है। और यहाँ वह उन्हें 1 से 24 तक गिनता है। कभी-कभी लेवियों के 24 आदेशों की उत्पत्ति के बारे में काफी चर्चा होती है।

अब, हम जानते हैं कि जब तक हम नए नियम तक पहुँचते हैं, तब तक लेवियों का एक बहुत ही अलग क्रम होता है, जिसमें लेवियों के सभी परिवार 24 अलग-अलग क्रमों में विभाजित होते हैं। और इनमें से प्रत्येक क्रम बारी-बारी से एक सप्ताह की सेवा करता है। एक क्रम 12 महीनों के कैलेंडर वर्ष के दो सप्ताह की सेवा करता है।

यह बात नए नियम के समय में अच्छी तरह स्थापित है। सवाल यह है कि यह कब शुरू हुआ? अब, इतिहास की किताब वास्तव में हमें उस सवाल का जवाब देने में मदद करती है। कुछ लोग इसे इतिहास की किताब की तारीख का पता लगाने के तरीके के रूप में इस्तेमाल करेंगे।

और इसलिए, क्योंकि वे मानते हैं कि उनके पास यह निर्धारित करने के लिए कुछ बाहरी साधन हैं कि लेवियों के 24 पाठ्यक्रमों और घुमावों का क्रम कब अस्तित्व में आया, यह वह समय होना चाहिए जब इतिहास लिखा गया था। लेकिन निश्चित रूप से, यह एक परिपत्र तर्क है क्योंकि यह अपने आप में यह स्थापित नहीं करता है कि इतिहास कब लिखा गया था। 24 आदेश कब शुरू हुए? खैर, इतिहास में कई संकेत हैं कि आदेशों की प्रथाएँ जैसा कि हम उन्हें जानते हैं, जब हम यीशु के समय में मंदिर में जाते हैं, तो इसकी उत्पत्ति इतिहासकार के समय की शुरुआत में हुई थी।

अगर हम इतिहासकार के समय को उसके द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार लें, जो कि इतिहास की पुस्तक में ही है, अर्थात् वंशावली और उसका इतिहास, जो हमें 5वीं शताब्दी के अंत में, 400 या उसके आसपास, शायद 300 के दशक में चौथी शताब्दी की शुरुआत में फारसी साम्राज्य में रखता है, यह तब है जब इनमें से कुछ चीजें पहले से ही स्थापित हैं। अब, इतिहासकार द्वारा चीजों के चित्रण में, इसकी उत्पत्ति वास्तव में उससे भी बहुत पहले की है। यही वह है जो दाऊद ने किया था जब दाऊद ने मंदिर के चारों ओर सभी संगीतकारों, लेवियों और मंदिर के सेवकों को संगठित किया था।

बेशक, हमारे पास स्वतंत्र रूप से यह जानने का कोई ऐतिहासिक साधन नहीं है कि दाऊद ने वास्तव में क्या किया। लेकिन उस दृष्टिकोण से, बेशक, हमारे पास यह कहने का कोई कारण नहीं है कि इतिहासकार यह कहने में गलत थे कि यह शुरू से ही दाऊद का विचार था। अब, यहाँ एक दोहराव है।

हम कभी-कभी इतिहासकार के पास मौजूद स्रोतों के इस्तेमाल के बारे में बात करते हैं। खैर, यहाँ एक ऐसा उदाहरण है जहाँ हम उसके स्रोत को बहुत स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। लेवियों का उसका स्रोत 23, अध्याय 23, श्लोक 3 से 23 था।

और श्लोक 20 से 31 में, वह बिल्कुल वही सूची लेता है और इसे कुछ पीढ़ियों तक आगे बढ़ाता है। तो, यह लेवियों के बारे में दोहराव है लेकिन अब इसे 40 या 50 साल बाद तक बढ़ा दिया गया है। तो, इतिहासकार हमें, इस अर्थ में, जो कुछ हो रहा है उसकी एक बहुत ही ऐतिहासिक तस्वीर दे रहा है।

और अब, इन सब के बाद, हम राष्ट्रीय अधिकारियों के संगठन पर आते हैं। और यहाँ पर हमें साम्राज्य का प्रशासन मिलता है। इसलिए, इतिहासकार इसे छोड़ता नहीं है, लेकिन वह साम्राज्य के सभी अलग-अलग हिस्सों में सैन्य कमांडरों के बारे में बात करता है: आदिवासी अधिकारी, नागरिक प्रशासक और फिर शाही परिषद।

तो, ऐसा नहीं है कि दाऊद के राज्य में साम्राज्य के प्रशासन के मामले में कमी थी। यह सिर्फ़ इतना है कि इतिहासकार यह सब एक अध्याय में रख सकता है क्योंकि उसके लिए जो वास्तव में महत्वपूर्ण है वह यह है कि हम समझें और देखें कि दाऊद ने उस चीज़ के लिए कैसे तैयारी की जिसे वह सबसे महत्वपूर्ण चीज़ जानता था, यानी परमेश्वर के राज्य का प्रतिनिधित्व करने में मंदिर का कार्य।

यह डॉ. ऑगस्ट कुंकल द्वारा इतिहास की पुस्तकों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 11 है, इस्राएल के नेता। एक राज्य को नेताओं की आवश्यकता होती है।